

Inhalt

| | |
|---|--------|
| Danksagung | S. 11 |
| Vorwort | S. 13 |
| Einleitung: Infrastruktur des Schreibens | S. 16 |
| 1. Einschnitt | S. 62 |
| 2. in statu nascendi | S. 66 |
| 2.1. Die Mutterlauge | S. 66 |
| 2.2. Das Anschließen der Geschichte | S. 73 |
| 2.2.1. Raum und Zeit | S. 73 |
| 2.2.2. Abnorme Zustände: Ich | S. 79 |
| 2.2.3. „künstlicher Ideenkreis“ | S. 86 |
| 2.2.4. Materialismus | S. 95 |
| 2.2.5. Egoismus | S. 98 |
| 2.2.6. Gespenster | S. 105 |
| 2.2.7. Die toten Kristalle und der keimende Samen: Allologoi und <i>accounts</i> | S. 108 |
| 2.3. Das Abschwingen des Denkens | S. 131 |
| 2.3.1. Was denkt | S. 131 |
| 2.3.2. Die elementare Zentralität des Augenblickes: oder der Versuch, die Dinge so zu sehen, wie sie sind | S. 144 |
| 2.3.3. Induktion | S. 158 |
| 2.3.4. Gedankenreihen: Entelechie und Interferenz | S. 166 |
| 2.3.5. Abschwingen | S. 189 |
| 3. Dualität | S. 212 |
| 3.1. Störung und Dualität | S. 212 |
| 3.1.1. Geschehen | S. 212 |
| 3.1.2. Geschichte | S. 227 |
| 3.2. Raum und Zeit: eine Hor(r)o(r)logie | S. 240 |
| 3.3. Un-Ruhe und Un-Sinn | S. 251 |
| 3.4. Dualität, Triadität und die Mittler | S. 284 |

| | | |
|------|--|--------|
| 3.5. | Sprache und Eponymität | S. 320 |
| 4. | Abschwingen: Von den phänomenalen Bedingungen der Dinge | S. 374 |
| | Schluss | S. 445 |
| | Bibliographie | S. 452 |